जनसंवाद कर यूसीसी पर राय भी लेगी।

Dainik Bhaskar
20-5-2026

विस समिति ने समझे पराली जलने के दुष्प्रभाव, जानी परेशानियां

मध्यप्रदेश में अब 'माननीय' बताएंगे कि पराली की समस्या से कैसे निपटें

पॉलिटिकल रिपोर्टर | भोपाल

पंजाब को पछाड़कर मप्र फिर पराली जलाने में आगे

केंद्र के आंकड़ों के मुताबिक, मप्र गेहूं की कटाई के बाद 1 अप्रैल से 19 मई से बीच पराली जलाने के कुल 37 हजार 652 मामलों के साथ देश भर में अव्वल है। पराली जलाने में पहले कुख्यात रहे पंजाब (9531) और हरियाणा (3355) काफी पीछे हैं। मप्र में 19 मई को ही 220 जगहों पर पराली जलने के मामले सामने आए। डेढ़ -दो साल में मप्र सरकार के लगातार प्रयासों के बाद भी पराली जलने की समस्या कम नहीं हो रही है।

मप्र विधानसभा की कृषि विकास समिति के प्रतिनिधिमंडल ने मंगलवार को केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान का दौरा किया। इस दौरान फसल अवशेष प्रबंधन और पराली जलाने की गंभीर समस्या के समाधानों पर एक्सपर्ट और किसानों से विस्तार से चर्चा की।

इस दौरान समिति के अध्यक्ष ठाकुरदास नागवंशी ने फसल कटने के बाद बचे अवशेषों को जला देने से पैदा हो रहीं चुनौतियों का उल्लेख करते हुए संस्थानों, नीति-निर्माताओं, उद्योगों और किसानों के बीच समन्वय की जरुरत पर बल दिया। विधानसभा सचिवालय के अपर सचिव उमेश शर्मा ने पराली जलाने से होने वाले पर्यावरणीय व स्वास्थ्य दुष्प्रभावों पर चिंता व्यक्त करते हुए प्रभावी रणनीतियों की जरूरत बताई। संस्थान के निदेशक डॉ. सीआर मेहता ने पराली प्रबंधन में कृषि यंत्रों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने इन-सीटू (खेत में) प्रबंधन के लिए जीरो टिल सीड ड्रिल, हैप्पी सीडर और स्ट्रिप ड्रिल जैसी तकनीकों को प्रभावी समाधान बताया। वहीं एक्स-सीटू (खेत से बाहर) प्रबंधन के तहत बायोमास आधारित विद्युत उत्पादन, एथेनॉल, बायोगैस व बायो-सीएनजी उत्पादन जैसे विकल्प साझा किए। विधायकों ने कई गावों से आए किसानों के नरवाई समस्या पर बात की।

मंत्री सिंह

भोपाल|
ने कहा

संपति

जिस
मैंने
विषय

उ
मध्य
देना
सम
प्रभ
औ
रख
वि
कुछ

डेली करंट अफेयर्स
24 घंटे की सबसे बड़ी बातें